जुलाई 2026 अंक में प्रकाशित

आपको याद दिलाने के लिये

आपको इस मास ये साधनाएं सम्पन्न करनी हैं
जिनका पूर्ण विवरण पिछले माह जुलाई 2026 में प्रकाशित है

श्रावण सोमवार अभिषेक

(श्रावण मास - 30 जुलाई 2026 से 28 अगस्त 2026)

श्रावण मास में शिव आराधना को शुभ और शीघ्र फलदायी माना जाता है। इस माह में शिव पूजा, अभिषेक, शिव स्तुति, मंत्र जप आदि का विशेष महत्व है। भगवान सदाशिव सभी सांसारिक कलह, अशांति व संकटों से रक्षा करते हैं। श्रावण मास में शिव उपासना ग्रह दोष और पीड़ा का अंत करने वाली भी मानी गई है। श्रावण सोमवार को देवाधिदेव महादेव की साधना से बाधा हरण, स्थायी लक्ष्मी, शत्रु विजय और आनन्द की प्राप्ति होती है।

श्रावण मास - रसेश्वर शिव साधना कल्प

प्रथम सोमवार - 03 अगस्त 2026 - बाधा हरण सिद्धि दिवस

द्वितीय सोमवार - 10 अगस्त 2026 - स्थायी लक्ष्मी सिद्धि दिवस

तृतीय सोमवार - 17 अगस्त 2026 - शत्रु बाधा निवारण सिद्धि दिवस

चतुर्थ सोमवार - 24 अगस्त 2026 - रसेश्वर शिव आनन्द सिद्धि दिवस

श्रावण मास में शिव आराधना को शुभ और शीघ्र फलदायी माना जाता है। इस माह में शिव पूजा, अभिषेक, शिव स्तुति, मंत्र जप आदि का विशेष महत्व है। भगवान सदाशिव सभी सांसारिक कलह, अशांति व संकटों से रक्षा करते हैं। श्रावण मास में शिव उपासना ग्रह दोष और पीड़ा का अंत करने वाली भी मानी गई है। श्रावण सोमवार को देवाधिदेव महादेव की साधना से बाधा हरण, स्थायी लक्ष्मी, शत्रु विजय और आनन्द की प्राप्ति होती है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/- (जुलाई 2026 पृष्ठ सं. 30)

तंत्र उत्कीलन त्रिपुरा साधना

(सूर्य ग्रहण/हरियाली अमावस्या - 12 अगस्त 2026 अथवा किसी भी अमावस्या)

कीलन का तात्पर्य है, एक बन्धन। जिस प्रकार एक खूंटे से बंधा पशु एक सीमा से आगे नहीं बढ़ सकता, खूंटे से गले तक की रस्सी किसी के लिए छोटी हो सकती है और किसी के लिए बड़ी, परन्तु बन्धन तो बन्धन ही है। इसी प्रकार यदि किसी व्यक्ति की शक्तियों का कीलन हो जाता है तो वह एक सीमा तक ही सफलता प्राप्त कर सकता है। उसके आगे पर अपने सम्पूर्ण प्रयास कर भी नहीं बढ़ पाता है।

यह कीलन उसके कर्मों के कारण, उसके दोषों के कारण, उस पर किये गये किसी तांत्रिक प्रयोगों द्वारा अथवा अन्य किसी कारण से हो जाता है और जब तक यह दोष दूर नहीं हो जाता तब तक वह कितना ही प्रयास करे, उसके कार्य पूर्ण सफल नहीं हो पाते। किसी भी प्रकार के कीलन को समाप्त करने हेतु 'तंत्र उत्कीलन त्रिपुरा साधना' सम्पन्न करें, कीलन दोष समाप्त करने में सफलता प्राप्त होगी।

कैसा भी वशीकरण प्रयोग हो, कैसा भी भीषण तांत्रिक प्रयोग हो, दुर्भावना वश मूठ प्रयोग हो, गृहस्थ या व्यापार बंधा हुआ हो तो तंत्र उत्कीलन त्रिपुरा साधना सम्पन्न करने से वह बेअसर हो जाता है और जो आपके विरुद्ध तंत्र प्रयोग करता है, उस पर ही तंत्र लौट आता है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/- (जुलाई 2026 पृष्ठ सं. 20)

तंत्र उत्कीलन त्रिपुरा शक्ति दीक्षा

(सूर्य ग्रहण/हरियाली अमावस्या - 12 अगस्त 2026 अथवा किसी भी अमावस्या)

अस्तित्व पर जब भी संकट आता है, उसका निराकरण तंत्र के द्वारा ही संभव है, क्योंकि तंत्र एक नपा-तुला, जांचा-परखा मार्ग है, जिसके द्वारा बाधाओं पर विजय प्राप्ति सम्भव है।

तन्यते विस्तार्यते ज्ञानम्, अनेन इत तंत्रम्।

तंत्र ज्ञान का विस्तार है और ज्ञान पूर्वक आचरण करने वाले की रक्षा ही करता है तथा यह ज्ञान सद्गुरुदेव के मार्गदर्शन में ही संभव है। 'तंत्र उत्कीलन त्रिपुरा शक्ति दीक्षा' के माध्यम से * साधक के चारों ओर एक सुरक्षा कवच निर्मित होता है। यह कवच नकारात्मक शक्तियों, दुष्प्रभावों और अनिष्ट संकल्पों से रक्षा करता है। * साधक की आन्तरिक शक्ति जागृत होती है। भीतर की दुर्बलता, भय, संशय और नकारात्मक दूर कर आत्मविश्वास प्रदान करती है। * कार्यों में गति आती है, निर्णय क्षमता बढ़ती है और रुके हुए कार्य आगे बढ़ने लगते हैं। * दृश्य अवरोधों का शमन होता है। इससे मंत्र सिद्धि, ध्यान और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है। * जीवन में संतुलन स्थापित होता है। मानसिक तनाव, भय, असुरक्षा और निराशा का भाव समाप्त हो जाता है।

- तंत्र उत्कीलन त्रिपुरा शक्ति दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. - 3100/- (जुलाई 2026 पृष्ठ सं. 22)

शुक्र साधना

(हरियाली एकादशी - 25 जुलाई 2026
अथवा कामदा एकादशी - 9 अगस्त 2026)

शुक्र तो सदैव यौवन, कांति, ऐश्वर्य, विलास, पुरुषों में वीर्य और स्त्रियों में रज का स्वरूप है। रज और वीर्य के मिलन से ही सृष्टि में सृजन होता है। प्रत्येक मनुष्य चाहता है कि उसके रूप और वाणी में ओज हो, व्यक्तित्व में आकर्षण हो और लोग उससे बात करने के लिए, उसके सान्निध्य के लिए लालायित रहें। सीधे-सादे शब्दों में उसके व्यक्तित्व में चुम्बकीय आकर्षण हो और जो उसे एक बार देखे या उससे बात कर ले, उसके लिए उसे भूलना कठिन रहे। ऐसा व्यक्तित्व शुक्र साधना से ही संभव है।

शुक्र की कृपा से साधक सुन्दर मुख, कान्ति युक्त शरीर, प्रभावशाली नेत्र तथा सभी प्रकार के रोग-शोक से मुक्त और सौन्दर्य प्रधान मन का व्यक्तित्व प्राप्त करता है। जीवन में आर्थिक समृद्धि के लिए शुक्र की कृपा अनिवार्य है। अगर शुक्र शुभ हैं तो वैभव-विलास के साधन स्वतः एकत्र हो जाते हैं। बिना शुक्र की अनुकूलता के किसी भी व्यक्ति के जीवन की सार्थकता संभव नहीं है। शुक्र की साधना से शुक्र को बलवान और अनुकूल बनाया जा सकता है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/-
(जुलाई 2026 पृष्ठ सं. 26)

प्रबल शुक्र तेजस्विता दीक्षा

शुक्र की शुभता से साधक को जीवन में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सभी कुछ मिल जाता है। ऐसी है, शुक्र की माया जिससे साधक और जन-साधारण कोई भी नहीं बच पाता है।

प्रबल शुक्र तेजस्विता दीक्षा के द्वारा मनुष्य की सभी भोग-विलासमयी इच्छाएं पूरी हो जाती हैं।

शुक्र के प्रभाव से व्यक्ति में मुख में तेज और मादकता छलक उठती है और वह अपने सौन्दर्य से किसी को भी अपने तेज से सम्मोहित-आकर्षित कर सकते है। सौन्दर्य-आकर्षण, प्रेम, सम्मोहन का प्रतीक शुक्र ही है, शुक्र का प्रभाव मनुष्यों पर सामान्यतः देखा जा सकता है। समाज में नीरसता को दूर कर सरसता पैदा करना, आलस्य और कुण्ठा को समाप्त कर उत्साह और उमंग पैदा करना तथा किसी को सार्थक कार्य करने के लिए प्रेरित कर देना यह क्षमता शुक्र की अनुकूलता से ही संभव है।

सद्गुरुदेव से सात चरण में प्रबल शुक्र तेजस्विता दीक्षा प्राप्त कर मंत्र जप करने से शुक्र की प्रबलता साधक को अवश्य ही प्राप्त होती है और साधक के जीवन में सम्मोहन और आकर्षण के प्रभाव से सर्व कार्य सिद्ध होने लग जाते है।

- प्रबल शुक्र तेजस्विता दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. - 3100/-
(जुलाई 2026 पृष्ठ सं. 28)

श्रावण मास : कल्याणकारी महादेव

(श्रावण मास - 30 जुलाई 2026 से 28 अगस्त 2026)

शिव का अर्थ ही कल्याण है, श्रावण मास हमें अपने भीतर के विकारों का शमन कर कल्याणमय बनने की प्रेरणा देते है। श्रावण मास केवल मांगने का समय नहीं, बल्कि स्वयं को बदलने का अवसर भी है, आत्मशुद्धि का पर्व है। शिव का अर्थ ही है जो कल्याण करे। अतः जो व्यक्ति अपने भीतर के अन्धकार को दूर कर प्रकाश की ओर बढ़ता है, वही वास्तविक रूप से श्रावण का पालन करता है।

श्रावण मास में शिवाभिषेक-साधना-उपासना से मनुष्य दुःख, भय, रोग, शत्रुता और संकटों से मुक्ति हेतु सम्पन्न करें -

पाशुपतास्त्रेय साधना एंव दीक्षा

श्रावण मास में भगवान शिव की कृपा से जीवन में पूर्ण सफलता के साथ भाग्योदय चाहते है तो 'पाशुपतास्त्रेय साधना-दीक्षा' साधक के लिये बहुत ही लाभकारी सिद्ध होती है।

शिव पुराण के अनुसार शौर्य प्रदायक पाशुपतास्त्रेय साधना दीक्षा के द्वादश लाभ इस प्रकार हैं -

* विजय और सफलता प्राप्त होती है * रोग समाप्त होते हैं और निरोगी अनुभव करता है * दुर्घटना की आशंका नहीं रहती * ऊर्जा, बल, साहस और क्षमता प्राप्त होती है * गृहस्थ जीवन में अनुकूलता प्राप्त होती है * लक्ष्मी प्राप्त होती है * शत्रुओं का भय नहीं रहता * भाग्योदय की स्थिति बनती है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 450/- (जुलाई 2026 पृष्ठ सं. 54)
- पाशुपतास्त्रेय दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. - 3100/- (जुलाई 2026 पृष्ठ सं. 55)

तांत्रोक्त पुष्पदंतेश्वर शिव साधना

तांत्रोक्त पुष्पदंतेश्वर शिव बहुत ही शीघ्र से प्रसन्न होकर अपनी कृपा से साधक को -

संतान विवाह में आ रही बाधाओं को समाप्त करते है।

योजना के क्रियान्वयन में बार-बार आ रही विघ्न बाधाओं का नाश करते है।

राज्य बाधा एवं सरकारी बाधाओं का नाश कर, धन प्रवाह का मार्ग प्रशस्त करते है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 460/- (जुलाई 2026 पृष्ठ सं. 56)

बृहस्पतीश्वर शिव साधना

ब्रह्मा के पौत्र अङ्गिरस ने भगवान शिव के जिस स्वरूप की साधना की वह साधना 'बृहस्पतीश्वर शिव साधना' के माध्यम से जगत में विख्यात हुई। श्रावण मास में आध्यात्मिक उन्नति, गुरु कृपा प्राप्ति, ज्ञान बल अभिवृद्धि, ध्यान-चेतना में अभिवृद्धि हेतु अवश्य सम्पन्न करें।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 450/- (जुलाई 2026 पृष्ठ सं. 57)